ज़िक्रे रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की मोहम्मद से वफा तूने तो हम तेरे हैं
ये जहाँ चीज़ है क्या लौहो कलम तेरे हैं

लेखक–
मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद रह.

अनुवादक–
डा. रफ़ीक़ अहमद

आ राज़ के दर सीना नेहां अस्त न वअज़ अस्त
बर दार तवां गुफ्त बर मेम्बर न तवां गुफ्त

अज़ीज़ाने मिल्लत ! माहे रबीउल अव्वल की आमद तुम्हारे लिये जश्न और खुशियों का एक आम पैग़ाम होता है। क्योंकि तुम को याद आ जाता है कि इसी महीने के शुरूआती हफ्तों में खुदा की रहमते आम का दुनिया में प्रदर्शन और इस्लाम के सच्चे पैग़म्बर की पैदाइश से दुनिया की ग़मगीनियों और मुसीबतों का ख़ात्मा हुआ ।
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

तुम खुशियों और मसर्रतों के जज़्बे से लबरेज़ हो जाते हो, तुम्हारे अन्दर रसूले बरहक़ की मुहब्बत और इश्क़ ख़ुद से ग़ाफिल कर देने वाला जोश पैदा हो जाता है। तुम अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त उसी की याद में, उसी के ज़िक्र में, और उसी की मुहब्बत की लज़्ज़त और मिठास में बसर करना चाहते हो।

तुम उसके ज़िक्र व फिक्र की मजलिसें आयोजित करते हो, उनकी सजावट और ज़ीनत में अपनी मेहनत की कमाई बेपनाह लुटाते हो, खूबसूरत और तरोताज़ा फूलों के गुलदस्ते सजाते हो, काफूरी दियों के खूबसूरत फ़ानूस और बिजली के कुमकुमों के कंवल रौशन करते हो, इत्र व गुलाब की महक और अगरबत्तियों का खुशबूदार धुआं जब मजलिस के दायरे को अच्छी तरह सुगंधित कर देता है तो उस वक़्त तारीफ़ व तौसीफ के गीतों और दरूद व सलाम

के पाक तरानों के अन्दर अपने महबूब व मतलूब के याद मे पनाह ढूंढते हो और कभी–कभी तुम्हारी आँख और तुम्हारे महबूब दिलों की आहें उसके पाक नाम से दिली मुहब्बत करतीं और उसके इश्क से ज़िन्दगी की रूह हासिल करती हैं।

तो कितने मुबारक हैं वह दिल जिन्होंने अपने इश्क़ व मुहब्बत की ज़मीन के लिये आसमान को पैदा करने वाले महबूब को चुना और क्या पाकीज़ा हैं वो ज़बान जो नबियों के सरदार रहमतुल्लिल आलिमीन की तारीफ़ व तौसीफ़ में तराना पढ़ती रहीं।

मसलेहत दीद मन आंस्त कि यारा हम:कार
बगुज़रानन्द व खम तुर्ये यारे गीरन्द

उन्होंने अपने इश्क़ व मुहब्बत के लिये उसकी महबूबियत को देखा जिसको खुद खुदा ने अपनी चाहतों और मुहब्बतों से मुम्ताज़ किया और उनकी जबानों में उसकी तारीफ़ व तौसीफ में ख़ुद खुदा की ज़बान के पैगम्बरों और पाकी बयान करने वाले फ़रिश्तों की ज़बान औरकायनात की तमाम पाक रूहों और नेक लोगों की ज़बान शरीक और साथ है।

बिलाशुब्हा मुहब्बते रसूल और इश्के मुहम्मदी का यह मुख़लिसाना ज़ौक व शौक तुम्हारी ज़िन्दगी की रूह से क़ीमती पूंजी है और तुम अपने इन पाक जज़्बात की जितनी हिफ़ाज़त करो कम है। तुम्हारा यह इश्क इलाही, तुम्हारी यह मुहब्बत रब्बानी है, तुम्हारा यह इश्क इन्सानी सिआदत

और सच्चाई का चश्मा (स्रोत) है, तुम इस पाकीज़ा वजूद से मुहब्बत रखते हो जिसका तमाम कायनाते इन्सानी में से तुम्हारे खुदा ने हर तरह की तारीफ़ों और हर क़िस्म की मुहब्बतों के लिये चुन लिया और महबूबियते आलम का अज़ीम पोशाक सिर्फ उसी के पाक वजूद पर ठीक आया। धरती की सतह पर इन्सान के लिये बड़ी से बड़ी बात जो लिखी जा सकती है, ज़्यादा से ज़्यादा जो इश्क़ किया जा सकता है, बड़ी से बड़ी तारीफ़ जो की जा सकती है, गर्ज़ की इन्सान के लिये जो कुछ कह सकती है और कर सकती है, वह सब का सब सिर्फ़ एक इन्साने कामिल के लिये है और उसका हक़दार उसके सिवा कोई दूसरा नहीं।

मक़सूद मा ज़दैरोहरम जुज़ हबीब नेस्त
हर जा कुनेम सज्दा बदां आस्तां रसद

तने तन्हा खुदा की खुदाई और परवरदिगारी जिस तरह तनहा और और लाशरीक है कोई हस्ती उसकी शरीक नहीं, इसी तरह उस इन्साने कामिल की अज़ीम इन्सानियत और बेमिसाल बन्दगी भी अकेली और लाशरीक है क्यों कि उसकी इन्सानियत और बन्दगी में कोई उसका सानी नहीं और उस बेमिसाल हुस्न और खूबसूरती में भी उसका कोई साझी नहीं।

यही वजह है कि कुरआन हकीम में तुम देखते हो कि तमाम नबियों का ज़िक्र जहाँ कहीं भी किया गया है, वहां उन सब के नामों से पुकारा है और उनके वाक़िआत का भी ज़िक्र किया है तो उनके नामों से किया है। लेकिन उस

इन्साने कामिल, उस मुकम्मल ज़ात, उस बेमिसाल और अकेली ज़ात का अक्सर मुक़ामों पर उसी तरह ज़िक्र किया है कि न तो उसका नाम लिया गया है, ना ही किसी दूसरे वस्फ़ से नामज़द किया गया, बल्कि सिर्फ़ ''अब्द'' के लफ्ज़ से उसके परवरदिगार ने उसे याद किया।

''कैसी पाक ज़ात है जिसने एक रात में अपने ''अब्द'' को मजिस्दे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक की सैर कराई'' (बनी इसराईल 1)

सूरह ''जिन्न'' में फ़रमाया–

''और जब अल्लाह का बन्दा हक़ की तबलीग़ के लिये खड़ा हो जाता है ताकि अल्लाह को पुकारे तो काफ़िर उसको इस तरह घेर लेते हैं मानो क़रीब है कि उस पर आ गिरेंगे।'' (आयत 19)

सूरह ''कहफ़'' को इस तरह इस आयत से शुरू किया।

''सारी तारीफ़ अल्लाह के लिये ही हैं जिसने अपने ''बन्दे'' पर किताब उतारी।'' (आयत–01)

सूरह फ़ुरक़ान की पहली आयत है–

''क्या ही पाक ज़ात है उसकी जिसने अल फ़ुरक़ान अपने बन्दे पर उतारा ताकि वह तमाम आलम की गुमराहियों के लिये डराने वाला बने''। (आयत–01)

इसी तरह सूरह ''नज्म'' में फ़रमाया फिर अल्लाह ने वही की अपने बन्दे की तरफ़ जो वही की (आयत–10)

सूरह ''हदीद'' में फ़रमाया– वही है जो अपने बन्दे पर आयते उतारी (आयत–09) इन तमाम जगहों पर आपका

नाम नहीं लिया बल्कि उसकी जगह सिर्फ ''अब्द'' फ़रमाया हालांकि कुछ नबियों के लिये अगर ''अब्द'' का लफ़्ज़ फ़रमाया है तो उसके साथ नाम की तशरीह भी कर दी है। सूरह ''मर्यम'' में हज़रत ज़करिया अलै० के लिये फ़रमाया. ''यह उस रहमत का ज़िक्र है जो तेरे रब ने अपने बन्दे ज़करिया पर की'' (आयत-02) सूरह ''साद'' में फ़रमाया ''और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो, और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो'' (आयत-17-41) इस खुसूसियात और फ़र्क से इस हक़ीक़त को स्पष्ट करना मक़सूद था कि इस महान हस्ती की बन्दगी और अब्दीयत उस आख़िरी दर्जे और अंतिम सीमा तक पहुँच चुकी है जो इन्सानियत की आखिरी सीमा है और जिसमें कोई बन्दा इस बन्दये कामिल के बराबर नहीं, बन्दगी और ग़ुलामी की वह मात्र अकेली ज़ात है और इसीलिए बग़ैर इज़ाफत व निस्बत के सिर्फ ''अब्द'' का लफ्ज़ उसके नामों और अलमों की तरह पहचान करवा देता है। क्योंकि तमाम कायनाते हस्ती में उस जैसा कोई ''अब्द'' नहीं।

तो यह वह था कि उसकी महान खूबियों का यह हाल है, उसकी इन्सानियत और बन्दगी की वहदत इस तरह कायनात में समाई है, उसकी मुहब्बत व महबूबियत का खुद परवरदिगारे आलम ने एलान किया और उसकी रहमत और करम को, अपनी परवरदिगारी की तरह तमाम आलम पर फैला दिया, उसको अल्लाह तआला ने अपनी रहमत व मुहब्बत की सिफात से नवाज़ा और अगर अपने

आपको रहमानिर्रहीम कहा तो उसे भी मोमिनों के लिये रऊकुर्रहीम क़रार दिया। उसको पूरे कुरआन में कभी भी नाम लेकर न पुकारा बल्कि कभी सदाए इज़्ज़त से नवाज़ा, ''ऐ रसूल'' और कभी तरीके मुहब्बत से पुकारा ''ऐ चादर लपेटने वाले'' उसके वजूद की इज़्ज़त व अज़मत को अपनी इज़्ज़त की तरह अपने बन्दों पर फ़र्ज़ कर दिया और जगह-जगह हुक्म दिया कि ''उसकी इज्ज़त करो और उसकी तौक़ीर बजा लाओ।'' (सूरह फतह आयत-9) फिर वह की उसकी महबूबियतों और अज़मतों का यह हाल था कि उसका पकीज़ा वजूद तो बड़ी चीज़ है, वह जिस आबादी में बसा और जिस शहर की गलियों में चला फिरा, उसकी इज़्ज़त को भी ज़मीन व आसमान के पलानहार ने तमाम जहानों में नुमायां कर दिया। हम मक्का की क़सम खाते हैं मगर इसलिये कि तेरा वजूद उसी सरज़मीन में रहा और बसा है। (सूरह बलद आयत- 1-2)

तो जिसकी पाकीज़गी और अज़मत का यह मर्तबा हो उसकी याद में जितने भी लम्हे कट जायें, उसके इश्क में जितने भी ऑसू बह जायें, उसकी मुहब्बत में जितनी भी आहें निकल जायें और उसकी तारीफ़ व सना में जिस कद्र भी ज़बाने तर हो जायें, इन्सानीयत का हासिल, रूह की सिआदत, दिल की तहारत, ज़िन्दगी की पाकी और रब्बानियत और इलाहियत की बादशाही है।

राह तू बहरेक़दम के पोयन्द खुशअस्त
वस्ल तू बहरे सबब के जोयन्द खुशअस्त

रूये तू बहरदीदा के बीनन्द निकोस्त

नाम तू बर ज़बां के गोयन्द खुशअस्त

जश्न और मातम

लेकिन जब कि तुम इस माहे मुबारक मे ंयह सब कुछ करते हो और इस माह में होने वाली मुबारक पैदाइश की याद में खुशियां मनाते हो, तो उसकी खुशियों के अन्दर तुम्हें कभी अपना मातम भी याद आता है जिसके बग़ैर अब तुम्हारी खुशी नहीं हो सकती ? ''कभी तुम ने इस हक़ीक़त पर ग़ौर किया है कि यह किसकी पैदाइश है, किसी याद के लिये तुम जश्न का सरो सामान इकट्ठा करते हो ? यह कौन था जिसकी पैदाइश के चर्चों में तुम्हारे लिये खुशियों और मसर्रतों का ऐसा प्यारा पैग़ाम है

आह ! अगर इस महीने की आमद तुम्हारे लिये जश्न व मसर्रत का पयाम है, क्योंकि इस महीने में वह आया जिसने तुमको सब कुछ दिया था तो मेरे लिये इससे बढ़कर और किसी महीने में मान्य नहीं क्यों कि उस महीने में पैदा होने वाले ने जो कुछ हमें दिया था वह सब कुछ हमने खो दिया। इसलिये अगर यह महीना एक तरफ बख्शने वाले की याद ताज़ा करता है, तो दूसरी तरफ खोने वाले ज़ख्म को भी ताज़ा हो जाना चाहिए।

मा खाना रमीदगाने ज़लमीम

पैग़ाम खुश अज़ दयार मा नेस्त

तुम अपने घरों को मजलिसों से आबाद करते हो,

मगर तुम को अपने दिल की उजड़ी हुई बस्ती की भी कुछ ख़बर है? तुम काफ़ूरी शमओं के चिराग़ रौशन करते हो, मगर अपने दिल के अंधियारे को दूर करने के लिये कोई चिराग़ नहीं ढूँढते ? तुम फूलों के गुलदस्ते सजाते हो, मगर आह ! तुम्हारी नेकियों का फूल मुरझा गया है। तुम गुलाब की छींटों से अपने रूमाल और आस्तीनों को मुअत्तर (सुगंधित) करना चाहते हो, मगर आह ! तुम्हारी ग़फलत कि तुम्हारी इस्मते इस्लामी की खुशबू से दुनिया की रगे रूह बिलकुल महरूम है। काश तुम्हारी मजलिसें तारीक होती, तुम्हारे ईंट व चूने के मकानों को ज़ीनत का एक ज़र्रा नसीब न होता, तुम्हारी ऑखें रात-रात भर मजलिस सजाने में न जागती, तुम्हारी ज़बान से माहे रबीउल अव्वल की विलादत के लिये दुनिया कुछ न सुनती, मगर तुम्हारी रूह की आबादी मामूर होती, तुम्हारे दिल की दुनिया न उजड़ती, तुम्हारी सोई हुई क़िस्मत जाग उठती और तुम्हारी जबानों से नहीं मगर तुम्हारे आमाल के अन्दर उस्वये नबवी की तारीफ़ व तौसीफ़ के तराने गूंजते।

''क्योंकि ऑखे अँधी नहीं होती बल्कि वे दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।'' (सूरह हज-46)

मुझे यह डर है कि दिले ज़िन्दा तू न मर जाये
कि ज़िन्दगी इबारत है तेरे जीने से

फिर आह ! वह क़ौम और हज़ार बार आह, उस क़ौम की ग़फलत व नादानी, जिसके लिये हर जश्न और खुशी में मातम का पैग़ाम है और जिसकी क़ौमी ज़िन्दगी की अैश व आराम हर क़हक़हा, ग़म और मायूसी की शक्ल इख्तियार कर गया है। मगर न तो माज़ी (अतीत) की

अज़मतों में उसके लिये कोई इबरत है न हाल (वर्तमान) के वाकियात में कोई तम्बीह और होशयारी है और न यह क़ौम मुस्तकबिल (भविष्य) के अंधेरों में ज़िन्दगी की किसी रोशनी को अपने सामने रखती है, उसे अपने कामों और जश्न व मसर्रत की महफिलों से फ़ुरसत नहीं, हालांकि उसके जश्न व मुसर्रत के दरूद व सलाम के हर तरानों में एक न एक मातम व इबरत का पैग़ाम रख भी दिया गया है। बशर्ते कि ऑखें देखें, कान सुनें और दिल की दानाई ग़फलत और खुशियों की मस्तियों ने छीन न ली हो। ''इसमें याददिहानी है उस शख्स के लिए जिसके पास दिल हो या वह कान, लगाये मुतवज्जो होगा'' सूरह काफ़ आयत–37)

ज़ुहूर और मक़सदे ज़ुहूर

माहे रबीउल अव्वल की याद में हमारे लिये जश्न व मसर्रत का पैग़ाम इसलिये था कि इसी महीने में खुदा की रहमत का वह फ़रमान दुनिया में आया जिसके ज़ुहूर ने दुनिया की बदनसीबी और नाउम्मीदी का मौसम बदल दिया, जुल्म और सरकशी और फ़ितना व फ़साद के अंधेरे मिट गये, खुदा और उसक बन्दों का टूटा हुआ रिश्ता जुड़ गया, इन्सानी भाईचारा और बराबरी के पैग़ाम ने दुश्मनियों और कीनों को मिटा दिया और कलिमये कुफ्र व ज़लालत की जगह कलिमये हक़ व इन्साफ की बादशाही का आम ऐलान हुआ। ''अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारी जानिब एक नूरे हिदायत और किताबे मुबीन आयी। अल्लाह उसके ज़रिये अपनी रज़ा चाहनों वालों को सलामती और ज़िन्दगी

की राहों पर हिदायत फ़रमाता और सिराते मुस्तकीम को खोलता है'' (सूरह माइदा– 16, 17)

लेकिन दुनिया जुल्म व ज़्यादती की दर्द से फिर तड़पने लगी, इन्सानी फ़ितना व फ़साद और जुल्म और सरकशी का अंधेरा खुदा की रोशनी पर ग़ालिब आने के लिये फैल गया, सच्चाई व ईमानदारी की खेतियों को तबाह व बर्बाद कर डाला गया और इन्सानों के भटके हुए रेवड़ का कोई रखवाला न रहा । खुदा की वह जमीन जो सिर्फ़ खुदा ही के लिये थी, गैरों को दे दी गई और उसके हक़ व इन्साफ के कलिमों के समर्थकों और साथियों से उसकी सतह खाली हो गयी।

''ज़मीन की खुशकी व तरी (जल व थल) दोनों मे इन्सानों की पैदा की गई शरातों से फ़साद फैल गया और ज़मीन की इस्लाह व फ़लाह ग़ारत हुयी।'' (सूरह रूम–41)

फिर आह ! तुम उसके आने की खुशियां तो मनाते हो, मगर उसके ज़हूर के मक़सद से ग़ाफिल हो गये हो और वह जिस मक़सद के लिये आया था, उसके लिये तुम्हारे अन्दर कोई टीस और चुभन नहीं ?

यह माहे रबीउल अव्वल अगर तुम्हारे लिये खुशियों की बहार है तो सिर्फ इसलिये कि इसी महीने में दुनिया की ज़लालत की खिज़ां खत्म हुई और कलिमये हक़ के रबी का मौसम शुरू हुआ। फिर अगर आज दुनिया की अदालत गुमराहियों और ज़लालत के झोकों से मुर्झा गयी है, तो ऐ

ग़फलत के पुजारियो ! तुम्हें क्या हो गया है कि मौसमे बहार की खुशियों की रस्म तो मनाते हो मगर ख़िजां (पतझड़) की पामालियों पर नहीं रोते ?

आतिशीं शरीअत

इस मौसम की खुशियां इसलिये थीं कि इसी में अल्लाह की अदालत की वह ''आतिशीं शरीअत'' फ़ारानकी चोटियों पर ज़ाहिर हुई जिसकी सईर (अग्नि ज्वाला) की चोटियों पर साहिबे तौरात (हज़रत मूसा) को खबर दी गई थी और जो मज़लूमी के ऑसू बहाने, मिसकीनी की आहें निकालने, ज़िल्लत व नामुरादी से ठुकराये जाने के लिये दुनिया में नहीं आई थी, बल्कि इसलिये आयी थी कि हक़ व इन्साफ़ के दुश्मन नाकामी के ऑसू बहायें। दुश्मनाने खुदा ज़िल्लत और रुसवाई के लिये छोड़ दिये जायें। गुमरही और बदबख्ती, नामुरादी और नाकामी की ज़िल्लत से ठुकराई जाये और सच्चाई और रास्ती का अर्शे अज़मत व जलाले नुसरते इलाही की कामरानियों और खुशनसीबी व खुशबख्ती की फ़तेहमंदियों के साथ तमाम कायनात में अपनी क़ूव्वत व ताक़त और पाकीज़गी का ऐलान करे। वह अल्लाह के हाथ की चमकायी हुई एक तलवार थी, जिसकी हैबत और कह्हारियत ने बातिल परस्ती की तमाम ताक़तों को लरज़ा दिया और कलिमये हक़ की बादशाहत और दायमी कामयाबी की दुनिया को खुशखबरी सुनायी।

''वह खुदा ही है जिसने अपने रसूल को दुनिया की भलाई

के क़ियाम और गुमराही के ख़ात्मे के लिये दीने हक़ के साथ भेजा ताकि वह तमाम दीनों पर उसे ग़ालिब कर दे।'' (सूरह तौबा–33)

उसकी हक्कानियत की ताक़त ही आखिर में दायमी (स्थायी) और आम कामयाबी पाने वाली है। अगर्चे मुश्किों पर ऐसा होना बहुत ही नागवार गुज़रे।

वह ज़िल्लत और अपमान का ज़ख्म न था बल्कि नाकामी व नामुरादी का ज़ख्म लगाने वाला हाथ था, वह मज़लूमी की तड़प न थी बल्कि ज़ुल्म को तड़पाने वाली तलवार थी, वह मिसकीनी की बेक़रारी न थी बल्कि दुनिया को बेक़रार करने वालों ने उससे बेक़रारी पायी, वह दर्द व कर्व की करवट न थी बल्कि दुख और दर्द में मुब्तेला करने वालों को उससे बेचैनी का बिस्तर मिला। वह जो कुछ लाया उसमें ग़मगीनी की चींख न थी, मातम की आह न थी, कमज़ोरी की बेबसी न थी और हसरत और मायूसी का ऑसू न था बल्कि यकसर खुशी व शादमानी का ग़लग़ला था। जश्ने मुराद की खुशखबरी थी,और कामयाबी व ऐशफ़रमायी की बहार थी, ताक़त और फरमारवाई का इक़बाल था, उम्मीद और यक़ीन का गलबा था, ज़िन्दगी और कामयाबी का नमूना था, फतेहमन्दी की हमेशगी थी और नुसरत व कामरानी का सिबात।

''अल्लाह के वह नेक बन्दे जिन्होंने दुनिया की तमाम ताक़तों से कट कर कहा कि अल्लाह ही हमारा परवरदिगार है और उसके सिवा कोई नहीं, फिर साथ ही

उस पर जम गये और साबित क़दमी के साथ अपनी खुदा परस्ती को क़ायम किया, सो यह वह लोग हैं कि कामयाबी और कामरानी के लिये खुदा ने उनकों चुन लिया है वह अपने मदद करने वाले फरिश्तों को उन पर भेजता है।'' (सूरह हा०मीम० सज्दा- 30-31)

जो हर लम्हा खुशी और कामयाबी का पैग़ाम पहुँचाते हैं कि न तो तुम्हारे लिये खौफ़ है और न किसी तरह की ग़मगीनी। दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम खुदा की मदद और हिमायत से कामयाब हो गये और आखिरत में भी खुदा की मेहरबानियों से बामुराद। अल्लाह की तमाम नेमतें सिर्फ़ तुम्हारे लिये हैं तुम जो नेमत चाहोगे तुम्हे मिलेगी और जिस चीज़ को पुकारोगे पाओगे।

ग़म न करो मायूस न हो

क्योंकि वह जो रबीउल अव्वल में आया, उसने कहा कि ग़म और नाकामी उनके लिये होनी चाहिए जिनके पास कामयाबी और नुसरत बख्शने वाले का रिश्ता नहीं है, मगर वह जिन्होंने तमाम इन्सानी और दुनियावी ताक़तों से बग़ावत करके सिर्फ खुदा की कुद्दूस ताक़त के साथ वफ़ादारी की, और उस ज़ात को अपना दोस्त बना लिया जो सारी खुशियों का देने वाला और तमाम कामयाबियों का सरचश्मा (स्रोत) है तो वह क्यों कर ग़मगीनी पा सकते हैं और खुदा के दोस्तों के साथ उसकी ज़मीन में कौन है जो दुश्मनी कर सकता है?

''इसलिये कि अल्लाह मोमिनों का दोस्त और

मददगार है। मगर काफ़िरों का नहीं जिन्होंने उससे इन्कार किया।'' (सूरह मुहम्मद–11)

''जिन पाक रूहों ने खुदा की सच्चाई और हक़ व इन्साफ़ की ख़िदमत गुज़ारी के लिये अपने आपको वक़्फ कर दिया। वह किसी से नहीं डर सकते। अलबत्ता उनकी हैबत और सख़्ती से दुनिया को डरना चाहिये।'

''हक़ के दुश्मनों की शैतानी डरावों से न डरो, अल्लाह से डरो अगर तुम मोमिन हो।'' (सूरह आले इमरान–145)

दुनिया में एक दूसरे की मुख़ालिफ़ चीज़ें जमा हो सकती हैं। आग और पानी मुम्किन है कि एक जगह जमा हो जायें, शेर और बकरी हो सकता है कि एक घाट से पानी पी लें, लेकिन खुदा पर ''ईमान'' और ''इन्सान का खौफ़'' यह दो चीज़ें ऐसी एक दूसरे के मुखालिफ़ हैं जो कभी भी एक दिल में जमा नहीं हो सकतीं और अगर कोई बदबख्त खुदाई ईमान का दावा कर के इन्सान के डर से भी कांप रहा है तो तुम उन्हें उन कंकड़ों और पत्थरों की तरह ठुकरा दो जो इन्सान की राह में लुड़क कर आ जाते हैं ताकि दौड़ने वालों के लिये ठोकर बनें, क्यों कि वह ईमान और यक़ीन से महरूम हैं।

''मायूस न हो, ग़मगीन न हो तुम ही सब पर ग़ालिब आने वाले हो, अगर तुम सच्चे मोमिन हो। (सूरह आले इमरान–139)

''याद रखो कि जो लोग अल्लाह के दोस्त और

उसके चाहने वाले हैं उनके लिये न तो कोई ख़ौफ है और न कभी वह ग़मगीन होंगे।'' (सूरह युनूस-62)

नेमत का बदलाव

लेकिन आज जब कि तुम ईदे मीलाद की मजलिसें सजाते हो, तो तुम्हारा क्या हाल है ? वह तुम्हारी दौलत कहां है जो तुम्हें दी गयी थी ? वह तुम्हारी नेमते कामयाबी किधर गयी जो तुम्हें सौंपी गई थीं ? आह ! तुम्हारी रूहे ज़िन्दगी तुम्हें छोड़कर क्यों चली गयी, जो तुम में फूंकी गयी थी ? आह तुम्हारा खुदा क्यों तुम से रूठ गया ? और तुम्हारे आक़ा ने क्यों तुम को सिर्फ़ अपनी ग़ुलामी के लिये न रखा ? क्या रबीउल अव्वल के आने वाले ने खुदा का यह वादा नहीं पहुँचाया था कि इज़्ज़त सिर्फ तुम्हारे ही लिये है ? और इस दौलत का अब ज़मीन पर तुम्हारे सिवा कोई वारिस नहीं ?

''इज़्ज़त अल्लाह के लिये है उसके रसूल के लिये और मोमिनों के लिये लेकिन जिनके दिल निफ़ाक (कपटाचार) से भरे होते हैं वह इस हक़ीक़त को नहीं जानते।'' (सूरह मुनाफिकून-8)

फिर यह क्या इन्क़िलाब है कि तुम ज़िल्लत और अपमान के लिये छोड़ दिये गये हो और इज़्ज़त ने तुम से मुँह छिपा लिया है? क्या खुदा की मदद का वादा तुम तक नहीं पहुँचाया गया था कि- ''मुसलमानों को नुसरत और कामयाबी देना हमारे लिये ज़रूरी है'' (सूरह रूम-47)

यह किसी तरह नहीं हो सकता कि हम दूसरों को

कामयाब करें और मोमिन नाकाम रह जायें। फिर यह क्यों है के तुमने कामयाबी न पाई और कामयाबी और कामरानी ने तुम्हारा साथ छोड़ दिया ? क्या खुदा का वादा सच्चा न था ? और क्या वह अपने कौल का पक्का नहीं ? तुम जो इन्सानों के वादों पर ईमान रखते हो और उनके हुक्मों के आगे गिरना जानते हो, खुदा के वादे ''ला तुख़लिफुल मीआ़द'' (जो वादा खिलाफी नहीं करता) के लिये अपने अन्दर ईमान की कोई सदा नहीं पाते ? आह न तो उसका वादा झूठा था, और न उसने अपना रिश्ता तोड़ा, मगर वह तुम ही हो, तुम्हारी ही महरूमी व बेवफाई है, तुम्हारे ही ईमान की मौत और सच्चाई की बदक़िस्मती है, जिसने अपने पैमाने वफ़ा को तोड़ा और खुदा के पाक रिश्ते की इ़ज़्ज़त को अपनी ग़फलत और बदआमाली और ग़ैरों की इबादत और बन्दगी से बट्टा लगाया।

''इसलिये खुदा कभी किसी कौम की नेमत को महरूमी से नहीं बदलता जब तक कि वह क़ौम खुद ही अपने अन्दर बदलाव न पैदा करे और वह अपने बन्दों के लिये ज़ालिम नहीं है कि उनको बग़ैर जुर्म के सज़ा दे।'' (सूरह हज–10)

खुदा अब भी ग़ैरों के लिये नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे ही लिये है बशर्ते कि तुम भी ग़ैरों के लिये नहीं बल्कि सिर्फ खुदा ही के लिये हो जाओ।

''अगर तुम खुदा के कलिमये हक़ की मदद करोगे तो अल्लाह भी तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे अन्दर

साबित क़दमी और मज़बूती पेदा करेगा। (सूरह मुहम्मद–07)

यादगारे आज़ादी

तुम रबीउल अव्वल में आने वाले की याद और मुहब्बत का दावा रखते हो और मजलिसे सजा करके उसकी तारीफ़ व बड़ाई की सदायें बुलन्द करते हो, लेकिन तुम्हे यह कभी भी याद नहीं आता कि जिसकी याद का तुम्हारी ज़बान दावा करती है, उसके उस्वा (नमूना) को भुला देने के लिये तुम्हारा हर अमल गवाह है? और जिसकी तारीफ़ व तौसीफ़ में तुम्हारी ज़बानों से तराने गूंजते हैं, उसकी इज्ज़त को तुम्हारा वजूद बट्टा लगा रहा है? वह दुनिया में इस लिये आया था कि इन्सानों को इन्सानी बन्दगी से हटाकर सिर्फ अल्लाह की बन्दगी की राह पर चलाये और गुलामी की उन ज़ंजीरों से हमेशा के लिये नजात दिला दे जिनके बड़ी–बड़ी भारी बेड़ियां उन्होंने अपने पांव में डाल लिये थे।

''पैग़म्बरे इस्लाम के ज़हूर का मक़सद यह है कि पाबन्दियों और बंदिशों से इन्सान को नजात दिलाये, और गुलामी के जो पट्टे उन्होंने अपनी गर्दनों में पहन रखे हैं उनके बोझ से उन्हे रिहा करे।'' (सूरह आराफ–157)

उसने कहा कि इताअत सिर्फ एक ही की है और हुक्म व फ़रमान सिर्फ़ एक ही के लिये मुनासिब है।

''हुक्म व ताक़त किसी के लिये नहीं है मगर सिर्फ़ अल्लाह के लिये।'' (सूरह यूसुफ–40)

उसने सबसे पहले इन्सान को उसकी छिनी हुई आज़ादी वापस दिलाई और कहा कि मोमिन न तो बादशाहों की गुलामी के लिये है, न काहिनों (जिनों से मालूम करके ग़ैब की ख़बर देने वाला) की इताअत के लिये, न किसी और इन्सानी ताक़त के आगे झुकने के लिये, बल्कि उसके सर के लिये एक ही चौखट, उसके दिल के लिये एक ही इश्क, उसके पॉव के लिये एक ही ज़ंजीर और उसकी गर्दन के लिये एक ही तौक़े इताअत है। वह झुकता है तो उसके आगे, रोता है तो उसी के लिये, यक़ीन करता है तो उसी की ज़ात पर, डरता और लरज़ता है तो उसी के ख़ौफ से, उम्मीद करता है तो उसी की रहमत पर। वह मुश्रिक नहीं है कि खुदा की तरह इन्सानों को भी हैबत और कह्हारियत (सख़्तगीरी) की सिफ़त बख्शे।

''इबादत और गुलामी के लिये कई एक माबूद बना लेना अच्छा है यह एक ही वाहिद खुदा का हो रहना ? यह जो तुमने अपनी बन्दगी के लिये बहुत सी चौखटें बना रखीं हैं तो बतलाओ ? उनकी हस्ती सिवाये इसके क्या है कि कुछ वहमी नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बड़ों ने अपनी गुमराही से गढ़ लिये हैं और मुद्दत की गुमराही व रस्मपरस्ती ने उनके अन्दर बनावटी हैबत और खौफ़ पैदा कर दी है।'' (सूरह यूसुफ–39–40)

हालांकि खुदा ने न तो उनके अन्दर कोई ताक़त रखी न उनकी बन्दगी और मुहब्बत के लिये कोई हुक्म उतारा। यक़ीन करो कि तुम्हारी गुलामी के यह सारे बनावटी

बुत कुछ भी नहीं है। हुक्म व सुल्तानी दुनिया में नहीं है मगर सिर्फ़ अल्लाह के लिये, उसने हुक्म दिया है कि इबादत न करो मगर सिर्फ उसी की। यही इन्सान की सालेह फ़ितरत की राह है और इसलिये यही क़ायम और सच्चा दीन है और देखो कि उसने इन्सान की सच्ची और हक़ की आज़ादी को किस तरह मिसालों से समझाया।

''अल्लाह एक मिसाल देता है। यूं मान लो कि एक शख्स है जो किसी दूसरे इन्सान का गुलाम है। खुद उसे कोई इख्तियार हासिल नहीं। वह अपनी किसी चीज़ पर बावजूद यह कि उसी की है कुछ कुदरत नहीं रखता और सिर्फ अपने आका के हुक्मों का बन्दा है। मगर उसके मुक़ाबले में दूसरा इन्सान खुद आज़ाद मुख्तार है जिस पर किसी इन्सान की हुकूमत नहीं, उसे अपनी हर चीज़ पर कुदरत व इख्तियार हासिल है और जो कुछ खुदा ने दिया है वह खुले और छुपे जिस तरह चाहता है बेधड़क खर्च करता है, तो क्या यह दोनों आदमी एक ही तरह हो सकते हैं? क्या दोनों के हालत में कोई कमी नहीं ? अगर फ़र्क है तो फिर वह कि जिसका मालिक सिर्फ़ खुदा ही है और वह कि जिसके गले में इन्सानों की इताअत के तौक़ पड़े हुये हैं, दोनों एक ही तरह के कैसे हो सकते हैं?'' (सूरह नहल–75)

तो रबीउल अव्वल का महीना दुनिया के लिये खुशी व मसर्रत का महीना था, तो सिर्फ इसलिये कि इसी महीने में दुनिया का वह सबसे बड़ा इन्सान आया जिसने मुसलमानों को उसकी सबसे बड़ी नेमत यानी ''खुदा की

बन्दगी और इन्सानों की आकाई अता फ़रमायी और उसको अल्लाह की ख़िलाफ़त व नियाबत का लक़ब देकर ख़ुदा की एक पाक और मुहतरम अमानत ठहराया। तो रबीउल अव्वल इन्सानी आज़ादी की पैदाइश का महीना है, ग़ुलामी की मौत और हिलाकत की यादगार है, ख़िलाफ़ते इलाही की बखशिश का पहला दिन, इक़्तिदार की तक़सीम का पहला ऐलान है। इस माह में कलिमये हक़ व इन्साफ ज़िन्दा हुआ। और इसी में कलिमयेज़ुल्म व फ़साद और कुफ्र व ज़लालत की लानत से खुदा की धरती को नजात मिली।

लेकिन आह ! तुम इस माहे आज़ादी की आमद से ख़ुशियां मनाते हो और उसके लिये ऐसी तैयारियां करते हो, गोया वह तुम्हारे ही लिये और तुम्हारी ही ख़ुशियों के लिये आया है। ख़ुदा के बन्दों मुझे बतलाओ कि तुम इस पाक और मुकद्दस यादगार की ख़ुशी मनाने का क्या हक़ है ? क्या मौत और हिलाक़त को इसका हक़ पहुँचता है कि ज़िन्दगी और रूह का अपने को साथी बनाये? क्या एक मुर्दा लाश पर दुनिया की अक़्लें न हसेंगी और ज़िन्दों की तरह ज़िन्दगी को याद करेंगी ? हां यह सच है कि सूरज की रोशनी के अन्दर दुनिया के लिये बड़ी ही ख़ुशी है लेकिन एक अन्धे को कब ज़ेब (शोभा) देता है कि वह सूरज के निकलने पर ऑख वालों की तरह ख़ुशियां मनाये।

फिर तुम ही बतलाओ तुम कौन हो ? तुम ग़ुलामों का एक झुण्ड हो जिसने अपने नफ़्स की ग़ुलामी, अपनी ख़्वाहिशों की ग़ुलामी, अल्लाह के सिवाय सारे रिश्तों की

ग़ुलामी और ग़ैर इलाही ताक़तों की ग़ुलामी की ज़न्जीरों से अपनी गर्दन को झुका दिया है। तुम पत्थरों का एक ढेर हो जो न तो खुद हिल ही सकता है और न ही उसमें जान और रूह है, अलबत्ता चूर-चूर हो सकता है और एक दूसरे पर लुढ़काया जा सकता है, तुम मुटठी भर गर्द व ग़ुबार हो जिसको हवा उड़ा ले जाये तो उड़ सकती है वरना वह खुद सिर्फ इसलिये है कि ठोकरों से रौंदी जा सके और पैरों से कुचल डाली जाये।

गुलगुना आरिज़ है न है रंगे हिना तू
ऐ खूं शुदा दिल तू तो किसी काम न आया

फिर ऐ ग़फलत में पले हुये लोगों ! और ऐ बेखबरी की नींद सोने वाली रूहों, तुम किस मुँह से उसकी पैदाइश की खुशियां मनाते हो जो इन्सानी आज़ादी की बखशिश, रूह को ज़िन्दगी का अतिया और कामयाबी और बादशाहत और सुल्तानी के लिये आया था। अल्लाह अल्लाह ग़फलत की इन्तिहा और इंकिलाब की रंगारंगी अल्लाह के सिवाय गैरों की बन्दगी और ग़ुलामी की जंजीरें तुम्हारे पांव में हैं, इन्सानों की ग़ुलामी और बन्दगी के पट्टे गर्दनों में, ईमानबिल्लाह की मज़बूती से दिल खाली और नेक और आमले हस्ना की रौशनी से रूह महरूम। इन सामानों और तैयारियों के साथ तुम मुस्तइद हुये हो कि रबीउल अव्वल में आने वाले की याद का जश्न मनाओ, जिसका आना खुदा की बन्दगी की फ़तेह, ग़ैर इलाही इबादत का खात्मा, सच्ची आज़ादी का ऐलाने हक़, हक़ व इन्साफ़ की बादशाही की

खुशखबरी और हक़ व इन्साफ़ क़ायम करने वाली उम्मत के ग़लबे और क़ियामका बुनियाद था'' (सूरह-निसा-79)

तो ऐ ग़फलत में डूबी हुई मिल्लत ! तुम्हारी ग़फलत पर हज़ार बार अफ़सोस और कुढ़न, और तुम्हारी खुशियों पर हज़ार बार मातम व अलम, अगर तुम इस माहे मुबारक की असली अज़मत और हक़ीक़त से बेखबर रहो और सिर्फ ज़बानों के तरानों, घरों की सजावटों और रोशनी के चिराग़ों ही में उसके मक़सद व यादगारी को गुम कर दो तो तुम को मालूम होना चाहिये कि यह माहे मुबारक उम्मते मुस्लिमा की बुनियाद का पहला दिन है, खुदा की बादशाही के क़ियाम का सबसे पहला ऐलान है, खिलाफते अर्ज़ी व हुकूमते इलाही की बखशिश का सबसे पहला महीना है। इसलिये उसके आने की खुशी और उसके ज़िक्र और याद की लज़्ज़त उस शख्स की रूह पर हराम है जो अपने ईमान और अमल के अन्दर उस पैग़ामे इलाही की तामील व इताअत और उस उस्वये हसना की पैरवी और इताअत के लिये कोई नमूना नहीं रखता।

''तो मेरे बन्दों को खुशख़बरी दे दो जो बात को ग़ौर से सुनते हैं। फिर उसके बेहतर की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख्शी है और यही है जो अक्ल वाले हैं'' (सूरह- ज़ुमर- 17, 18)